शुंग एवं सातवाहन कालीन स्थापत्य कला

शुंग एवं सातवाहन कालीन स्थापत्य कला

शुंग काल की शुरुआत पुष्यमित्र शुंग के शासन काल से मानी जाती है। कला के क्षेत्र में इस काल में अनेक केन्द्रों में स्थापत्य एवं शिल्प का व्यापक प्रचार हुआ।प्रमुख रूप से यह काल स्तूपों के निर्माण के लिए जाना जाता है।इस काल में उत्तर भारत में तीन बड़े स्तूपों का निर्माण हुआ।उदाहरण के तौर पर **भरहूत (सतना मध्य प्रदेश),साँची (रायसेन मध्य प्रदेश) एवं बोध गया** है।इन स्तूपों का आधारिक स्तर पर निर्माण अशोक के काल में हुआ था।शुंग शासन के दौरान इन स्तूपों का सौंदर्यीकरण किया गया।साँची के एक अभिलेख से स्पष्टहोता है। बढई एवं दस्तकारो को पत्थर के ऊपर नक्काशी के काम के लिए बड़ी संख्या में लगाया गया।

साँची का स्तूप

अभिलेखों में साँची के महास्तूप का नाम **'महा चैत्य गिरी'** है। यहाँ से तीन स्तूपों की प्राप्ति हुई है। साँची के स्तूपों में **"सारिपुत्र"** एवं **"मोग्द्गालयन"** के अस्थि अवशेष रखे गये हैं। इस स्तूप को बलुआ पत्थर से सजाया गया। स्तूपों के चारो ओर तोरण को बौद्ध धर्म की कथाओं विशेषकर **जातक कथा** के दृश्यों से अलंकृत किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टिकोण से भी यह स्तूप उत्तर भारत के मंदिरों में भी सर्वश्रेष्ठ उदहारण है। यहाँ बनी सालभंजिका कि मूर्ति भारतीय कला में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

भरहूत का स्तूप

यह लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।यहाँ कि कला विशुद्ध रूप से ग्रामीण कला है। यहाँ तोरण के साथ साथ वेदिकाओं को भी अलंकृत किया गया है। भरहूत में बौद्ध कथाओं के अतिरिक्त **यक्ष यक्षिणी** की मूर्तिया बन गयी है। यक्षिणी कि मूर्ति में **चंदा यक्षिणी** की सबसे प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त भरहूत में **चूला कोका** देवता एवं सिरीमा देवता का भी अंकन किया गया है।भरहूत के स्तूप के अवशेष कलकत्ता के इंडियन म्युजियम में संरक्षित एवं संग्रहित किया गया है।

बोध गया का स्तूप

स्तूप को बोध गया के महाबोधि मंदिर परिसर से शुंग कालीन वेदिकाओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं। ये

वेदिकाएं पुष्प से अलंकृत एवं सुसज्जित हैं। वेदिकाओं पर बने पुष्प के मध्य मानव आकृति का निर्माण किया गया है।

मौर्यकालीन स्थापत्य कला

मौर्यकालीन स्थापत्य कला

मौर्यकालीन राज प्रसाद के प्रमाण आधुनिक पटना के कुम्हार नामक स्थान पर प्राप्त हुए हैं। यहां से बड़ी संख्या में लकड़ियों के विशाल खंड उत्खनन के पश्चात प्रकाश में आए। पटना से ही बुलंदीबाग नामक स्थल से पत्थर के स्तंभ-शीर्ष (Stone capital)प्राप्त हुए हैं। मेगास्थनीज के अनुसार तत्कालीन पाटलिपुत्र पश्चिमी दुनिया के सबसे ज्यादा सुंदर यहां लकड़ी एवं पत्थरों का प्रयोग भवन निर्माण के लिए किया गया था अर्थशास्त्र में **दुर्ग विन्यास प्रकरण** से मौर्यकालीन किलेबंदी के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध हुई है।

मौर्यकालीन अशोक स्तंभ चूना बलुआ पत्थर के बने हैं यह एकाश्क (Monolithic) है। इन स्तंभों के ऊपर **सिंह गज, वृषभ** की मूर्तियां लगाई गई थी। विशेष रूप से सारनाथ एवं सांची के स्तंभ शीर्ष चार सिंह वाली मूर्तियों से सुसज्जित हैं। अन्य प्रमुख स्तंभों में **रामपुरवा (बिहार) से प्राप्त वृषभ स्तंभ** विशेष महत्व के हैं।

पुरानी फोटो जो खुदाई के समय मिली

यह फोटो वर्तमान समय में राष्ट्रपति भवन में स्थापित की गयी है

मौर्य काल में पहली बार पत्थरों को काटकर **बराबर पहाड़ की गुफाएं** यही **शैल गुहा रॉक कट की** बनाने की विधि भी प्रचलित हुई। इसी युग की गुफाओं में मगध के प्रमंडल की **सुदामा ऋषि की गुफा, लोमश ऋषि की गुफा ,गोपी की गुफा ,विश्व झोपड़ी** ,आदि महत्वपूर्ण हैं। इनमें सबसे अलंकृत है लोमश ऋषि की गुफा का द्वार जिसके ऊपर काष्ट कला का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। **नागार्जुनी पहाड़ी की गुफाएं एवं सीतामढ़ी की गुफा** भी मौर्य काल के प्रस्तर शिल्प के प्रमुख उदाहरण हैं। इन गुफाओं की दीवारों पर एक विशेष प्रकार की चमक दिखाई पड़ती है जिसे साधारणतया मौर्य पॉलिश कहा जाता है यह चमक अशोक कालीन स्तंभों के समान है मौर्य काल में स्तूपों का बड़ी संख्या में निर्माण हुआ अशोक को 84000 स्तूप के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। अशोक कालीन स्तूप मिट्टी के ढेर के ऊपर ईटों के द्वारा निर्मित किए गए थे जिसके चारों ओर लकड़ी की वेदिकाओं का प्रयोग किया गया था कालांतर में इन्हीं स्तूपों के ऊपर विशेषकर **सांची एवं भरहुत स्थल** पर शासनकाल में पत्थरों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

बराबर पहाड़ की गुफाएं

व ै दिक कालीन सथापतयकला

व ै दिक कालीन सथापतयकला

सामानयतः यह माना जाता ह ै। कि व ै दिक अरथवयवसथा पशु-चारणिक थी। ऋगव े द म े ं कृषि समब ंधित एव ं सथाई गा ंव क े विषय म े ं दिए गए उदधरणअतय ंत कम ह ै ं।

फिर भी यह अनुमानित करना गलत न होगा कि ऋगव े दिक आरय मिटटी एव ं लकड़ी क े बन े भवनो ं म े ं निवास करत े थ े। सामानय रूप स े घर क े लिए व े दो ं म े ं **"सदम"** एव **"दम"** शवद परयोग म े ं आय े ह ै ं।एक कमर े वाल े मकान क े लिए **"एक व ै श्मिन"** दो कमरो ं वाल े कमर े को **"दवि व ै श्मिन"** बहुत सार े कमरो ं क े लिए **"बहुव ै श्मिन"**कहा जाता ऐसा परतीत होता ह ै कि व ै दिक काल म े ं साल वृकष क े टहनियो ं का परयोग मकानो क े निरमाण म े ं विश े ष रूप स े हुआ करता था। इसी स े काला ंतर म े ं **पाठशाला एव ं पाकशाला** ज ै स े शवदो ं का परचलित हुआ। भवनो ं क े निरमाणम े ं लकड़ी क े सतमभो ं का परयोग किया जाता रहा होगा।व े दो ं म े ं सतमभो ं क े लिए **सथूण** शवद का परयोग किया गया। दरवाजो ं क े लिए **दूरोण** (दरवाज े क े वाहर ब ै ठन े का सथान) शवद का परयोग किया गया।

हरियाणा क े भगवानपुरा नामक सथल स े 13 कमरो ं वाल े मिटटी क े एक मकान का साकषय मिला ह ै।उततर परद े श क े अहिछतर नामक सथान स े दुरगीकरण क े परयोग तथा अगनिव े दिकाओ ं क े साकषय परापत हुए ह ै ं।चूँकि व ै दिक काल म े ं ई ंट या पतथर ज ै स े सामगरिओ ं ज ै स े का परयोग नही ं हुआ अतः उस युग क े सथापतय क े पुरातातविक साकषय नही ं क े बराबर मिल े ह ै ं।

उततर व ै दिक कालीन म े ं अथरवव े द एक महतवपूरण गरनथ ह ै ।जिसम े **उततम ,मधयम** एव ं **अव ंम** तीन खणडो ं म े ं विभाजित नगर का पहली वार उलल े ख हुआ ह ै।

हड.पपा काल म े ं सथापतय कला

हड.पपा काल म े ं सथापतय कला

सथापतय क े कष े तर म े ं हड.पपा की तीन महतवपूरण उपलबधिया ं थी पककी ई ंटो ं स े निरमित भवन इ ंगलिश बा ंड म े थड क े आधार पर बनाए गए ह ै ं।सथापतय क े इतिहास म े ं इ ंगलिश बॉनड म े थड का यह पहला परयोग ह ै ।हड.पपा युग दूसरी उपलबधि थी फल े मिश बॉनड म े थड का परयोग ।सीढि.यो ं क े निरमाण म े ं विश े ष रूप स े इस पदधति का परयोग किया गया ह ै ।हड.पपा क े सथापतय म े ं कारव े लि ंग म े थड का भी कई जगह परयोग

हुआ है इस युग में नगर नियोजन की प्रणाली में आधारभूत तकनीकी समरूपता दिखाई पड़ती है उदाहरण स्वरूप हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो इन 2 नगरों में 640 किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद भी नगर की वास्तु योजना में एकरूपता दिखाई पड़ती है ।

भारतीय क्षेत्र में उत्खनन के प्रश्न पश्चात प्रकाश में आए धौलावीरा राखीगढ़ी एवं लोथल जैसे नगरों में भी वास्तु योजना में समरूपता दिखाई देती है, हालांकि भौगोलिक दशा विशेष के कारण स्थानीय स्तर पर भवन निर्माण में अलग-अलग सामग्रियों का प्रयोग किया गया है ।कालीबंगा नामक स्थल जो अपेक्षाकृत शुष्क प्रदेश में स्थित है, वहां मिट्टी के ईटों का ही जयादातर प्रयोग हुआ है सुरकोटड़ा नामक नगर के दुर्गीकरण में पत्थरों का प्रयोग भी स्थानीय कारणों से हुआ है गुजरात भवन निर्माण के दृष्टिकोण से भारतीय क्षेत्र में बसा धौलावीरा नामक नगर सबसे महत्वपूर्ण है ।अनय नगरों की वितृतीय संपूर्ण नगर तीन भागों में विभाजित है इस नगर में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए जलाशयों का निर्माण किया गया है धौलावीरा शहर में भी पत्थर को काटकर एक जलाशय का निर्माण किया गया है नगर में जल आपूर्ति के लिए भी उपयुक्त प्रणाली विकसित की गई थी इस नगर में भवनों के निर्माण में अच्छी तरह तरह से गैर गोल एवं अंग्रेजी के 8 अक्षर की भांति दिखने वाले सत्भ आधारों का प्रयोग किया गया है ।

हड़प्पा कालीन प्रमुख भवनों में आकार एवं वास्तु योजना की दृष्टि से मोहनजोदड़ो का गुजरात वृहत सनानागार हड़प्पा मोहनजोदड़ो से प्रापत अननगार तथा लोथल से प्रापत मानव निर्मित बंदरगाह का प्रथम उदाहरण विशेष महत्व के है हड़प्पा काल में पकी मिट्टी के नालियों के साथ-साथ टेराकोटा टाइलस का भी प्रयोग हुआ है ।